सुभद्रा कुमारी चौहान

हिंदी प्रदेशों के नवजागरण और सुधार युग को सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने रचना कर्म से जन-मन तक पहुंचाने का काम निर्भयता से किया था | उन्होंने झांसी की रानी, वीरों का कैसा हो वसंत जैसी अमर और सदाबहार कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्व को व्यक्त किया | देशभक्ति की निर्भीक अभिव्यक्ति से साहित्य और राजनीति में खास जगह बनाने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 को निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में क्षत्रीय परिवार में हुआ था |

सुभद्राजी के राष्ट्रीय कविताओं से प्रेरित होकर राष्ट्रकवि रामधारीसिंह "दिनकर" भी उनके जैसा बनना चाहते थे | सुभद्रा की रचनाशीलता का आरंभ 9 साल की बाल्यावस्था में ही हो गया था, जब उन्होंने नीम शीर्षक कविता की रचना की थी |

सुभद्रा की रचनाएं इस प्रकार है -

कविता संकलन मुकुल, नक्षत्र, त्रिधारा, सभा का खेल
कहानी संग्रह बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र

15 फरवरी, 1948 को बसंत पंचमी के दिन एक मोटर दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई |